वर्ष-१४ अंक-२
२७ अक्टूबर २०१७

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति २०.०० रु.

ओ३म्

ऋग्वेद

यजुर्वेद

सामवेद

अथर्ववेद

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

※ एक दृष्टि में आर्य समाज ※

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्

वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१४ अंक-०२

२७ अक्टूबर २०१७
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३११८
विक्रम संवत् २०७४
दयानन्दाब्द १९४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति २०-०० रू.
वार्षिक- २००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें
आवरण पृष्ठ २ एवं ३ ५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर) ४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का) २५० रू.
चौथाई पृष्ठ १५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
१.	दीप (कविता)	४
२.	धर्म के स्वरूप को जानना और उसे मानना महत्वपूर्ण हो	५
३.	स्वामी दयानन्द की दृष्टि में	७
४.	शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली)	११
५.	श्रद्धांजलि	१२
६.	तीर्थ स्नान क्या	१४
७.	रावण नहीं मरा	१८
८.	मेरा भारत महान्, मेरा भारत महान्	१९
९.	कौन बड़ा	२०
१०.	दीपावली पर्व	२१
११.	गो मूत्र के सरलतम घरेलू औषधीय उपयोग	२३
१२.	पाठ्यक्रम से संस्कृत हटाने का विरोध	२४
१३.	म्यांमार (बर्मा) में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	२५
१४.	प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन	२६

नवंबर माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

- मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस १
- गुरूनानक जयंती ४
- पं. जवाहरलाल नेहरू जयंती (बाल दिवस) १४
- बिरसा मुण्डा जयंती १५
- लाललाजपत राय बलिदान दिवस १७
- श्रीमती इंदिरा गांधी जयंती, रानी लक्ष्मीबाई जयंती १९
- वीर दुर्गादास राठौर पुण्यतिथि २२
- गुरू तेगबहादुर शहीदी दिवस २४
- डॉ. हरिसिंह गौर जयंती २६
- गीता जयंती २९

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

दीप

नन्हें दीपक ने ज्यों,
अन्धकार को ललकारा है।
बढ़ती दानवता ने आज,
मानवता को नकारा है।।

निराशा संस्कृति नहीं हमारी,
विश्वास ही इतिहास हमारा है।
ऐ सोने वालों जागो,
आने वाला कल तुम्हारा है।।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः" को,
जीवन सन्देश बना डालो।
जितने बुझे पड़े हैं दीप,
उठकर सारे जला डालो।।

— ***प्रकाश आर्य, महू***

दीपावली के ज्योति पर्व पर परमात्मा आप सबके हृदय ज्ञान प्रकाश से आलौकित कर दे, सुख समृद्धि स्वास्थ प्रदान करें, ऐसी प्रार्थना है। दीपोत्सव मंगलमय हो।

विनीत :

समस्त कार्यकारिणी सदस्य एवं पदाधिकारीगण
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

सम्पादकीय –

धर्म के स्वरूप को जानना और उसे मानना महत्वपूर्ण है

जीवन सफलता के लिए किसी सत्य ज्ञान की जानकारी प्राप्त करना पहली आवष्यकता है। बिना सही ज्ञान के हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। स्वाध्याय, सत्संग, विद्यालय, महाविद्यालय प्रषिक्षण केन्द्र आदि से हमारे ज्ञान को विकसित किया जा सकता है। विकसित करने के पीछे किसी तथ्य की मूल भावना व उसके महत्व को जानना और उससे जीवन में लाभ उठाना है।

उदाहरण के लिए मान लीजिए कोई किसी अपरिचित शहर में जाता है, वहां की भौगोलिक स्थिति की जानकारी के लिए उस शहर के किसी जानकार व्यक्ति से चर्चा करके समस्त शहर की बसाहट की जानकारी प्राप्त कर लेता है। शहर के किसी नक्षे को देखकर भी वह जान लेता है कि अमुक स्थान अमुक स्थान पर स्थित है। व्यक्ति का शहर का भ्रमण करना उद्देश्य है किन्तु जानकारी प्राप्त करने पर भी उसको मूर्त रूप (Implimention) नहीं देता।

क्या हम कह सकते हैं कि इस व्यक्ति ने शहर भ्रमण के उद्देष्य को प्राप्त कर लिया ? आपका उत्तर होगा, निष्चित ही नहीं।

व्यक्ति ने अपने लक्ष्य का आधा कार्य कर लिया, उसने सभी स्थानों की जानकारी प्राप्त कर ली। यह उचित है और आवष्यक भी था। परन्तु उस जानकारी के अनुसार वहां जाने का प्रयास ही नहीं किया, उस मार्ग पर चला ही नहीं, इसलिए वह ज्ञान व्यर्थ हो गया। बिना प्रयास व कर्म किए ज्ञान तक सीमित रह गया और लक्ष्य तक नहीं पहुंचा।

यही स्थिति आज समाज की है, अच्छे–अच्छे उपदेष सुनते हैं, अच्छी ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों, धार्मिक ग्रंथों को पढ़ते हैं। इस प्रयास से सत्य ज्ञान के नजदीक भी आ जाते है। क्या सत्य है, क्या धर्म है, क्या असत्य है, क्या पाप है इसका ज्ञान भी हो जाता है। परन्तु जीवन में उसे उतारने का काम नहीं करते। केवल ज्ञान संग्रह से ही सतकर्मों की, धर्म की पूर्ति मान लेते हैं। धर्म के संबंध में ऐसा व्यवहार सही रूप में धर्म पालन नहीं है।

अज्ञानतावष या अनजाने में की गई गलती करने वाला इतना दोषी नहीं है जितना किसी सही गलत की जानकारी रखने वाले व्यक्ति की जानकारी होने पर भी गलत कार्य करता है, और सही ज्ञान की उपेक्षा करता है। फिर वह व्यक्ति क्षमा का पात्र नहीं, वह बड़ा अपराधी है।

विष्व विख्यात विद्वान आचार्य मनु के अनुसार शुद्र (ज्ञान रहित) व्यक्ति को किसी अपराध के लिए जो दण्ड दिया जाता है उसकी तुलना में ज्ञानवान (ब्राह्मण) को उसी दण्ड को कई गुना अधिक बढ़ाकर दण्डित किया जाना चाहिए।

इसलिए मात्र सत्य ज्ञान की धर्म मार्ग की जानकारी से कोई महान नहीं बन जाता, विद्वान भी नहीं कहा जा सकता और धर्मात्मा भी नहीं माना जा सकता। यह

सब बनने के लिए ज्ञान के साथ आचरण में उसका होना परम आवष्यक है। मात्र ज्ञान ही पर्याप्त होता तो रावण और दुर्योधन को हम हेय दृष्टि से क्यों देखते ? दोनों ज्ञानी थे।

दुर्योधन ने कृष्ण को यही तो कहा था –

जानानि धर्मे न च मे प्रवृत्ति,
जानामि धर्म न च मे निवृत्ति।
केनापि देवेन हृ□दिस्थितेन,
यथा नियोक्ति तथा करोमी।।

दुर्योधन कहता है मैं धर्म को जानता हूं, उसके बिना मेरा जीवन सफल नहीं, उसके उल्लंघन से पतन है, पर क्या करूं मेरा हृदय इसे मानने के लिए स्वीकृति नहीं देता।

वर्तमान समाज इसी दुर्योधन की प्रवत्ति का षिकार है, जानकर भी अंजान बना हुआ है। धार्मिक बनना नहीं चाहता किन्तु वह अपने को धार्मिक दिखाना चाहता है।

आज के परिवेश में इसीलिए कहा –

धर्म प्रसंगादपि ना चरन्ति,
पापं चरन्ति यत्नतः।
एतत्तु चित्रं हि मनुष्य लोके,
अमृतं परित्यज्य विषं पिबन्ति।।

हमारा समाज प्रदर्षन प्रधान समाज होता जा रहा है।

प्रत्येक क्षेत्र में औपचारिकताओं ने यथार्तता को चारों ओर से ढांक दिया है, इस कारण यत्र–तत्र–सर्वत्र दिखावा ही दिखावा फैलता जा रहा है। किन्तु यह मानव जाति के लिए शुभ चिन्ह नहीं है। धर्म का प्रचार–प्रसार आचरण से होगा। सत्संग, उपदेश, व्याख्यान, कथाएं मार्ग दिखाती हैं, पर उन पर चलकर उन्हें आत्मसात करके ही कुछ अच्छा प्राप्त कर सकते हैं।

सफलता के पांच मूल सूत्र

0 मन में कार्य करने की तीव्र इच्छा

0 कार्य करने के लिए पर्याप्त साधन

0 साधनों का प्रयोग करने की यथार्त विधि

0 अन्तिम परिणाम आने तक पूर्ण पुरूषार्थ

0 बाधकों को सहन करने हेतु घोर तपस्या

स्वामी दयानन्द की दृष्टि में –

धर्म : जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है, जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरिक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक मानने योग्य है, उसे धर्म कहते हैं।

स्वर्ग : जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह स्वर्ग कहलाता है।

नरक : जो विशेष दुःख और दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह नरक कहलाता है।

अभयं मित्रादभयममित्रादमयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

अर्थात् : हे सर्व भयहर्ता परमात्मन्। मित्र से हमें अभय (अर्थात् भय से अन्य फल) शत्रु से अभय ज्ञात शत्रु तथा अज्ञात् शत्रु से अभय हो, रात्रि तथा दिन में अभय हो। सब दिशाएँ हमारे लिये हितकारिणी होवें।

सद्गुणों की महत्ता :

गुणैरूत्तमतां यान्ति नोच्चैरासन संस्थितैः।
प्रसाद शिखरस्थोपि काकः किं गरूड़ायते।। चाणक्य नीति

अर्थात् : गुणों से ही मानव महान होता है, न कि ऊँचे आसन पर बैठने से। महल के ऊँचे शिखर पर बैठने से कौआ गरूड़ नहीं हो सकता।

अद्यैव कुरू यच्छेयो मा त्वां कालोऽत्यगादयम्।
न हि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्।।

महाभारत शांतिपर्व 164–14

भावार्थ : जो उत्तम कार्य करना हो, वह आज ही कर डालो कहीं ऐसा न हो कि काल तुम्हें निगल जाय। मृत्यु इस बात की प्रतिक्षा नहीं करती कि तुमने कोई कार्य पूरा किया है या नहीं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस पर विषेष –

युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती

संसार में अनेक विद्वान और विभूतियों का स्मरण हम करते हैं। इनकी पहचान, समाज, राष्ट्र अथवा आध्यात्म की दृष्टि के लिए किए गए गौरवषाली कार्यों के कारण, उनकी सेवा अथवा त्याग के कारण होती है।

अधिकांष महापुरूषों की पहचान उपरोक्त तीनों क्षेत्र में से किसी एक के ही कारण समाज में है। किन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती की पहचान तीनों क्षेत्र के कारण बनी, यह महर्षि के जीवन की एक अनोखी विषेषता है।

आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय तीनों ही महर्षि के चिन्तन के विषय रहे।

अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं का कार्यक्षेत्र में कोई स्थान महर्षि ने नहीं दिया। एक अद्भुत व्यक्तित्व के धनी महर्षि दया के सागर थे तो दूसरी ओर अवैदिक मान्यताओं के कट्टर विरोधी, सत्य के पुजारी,, सत्य जीवन मूल्य से प्रिय मानने वाले दढ़ विष्वासी, ईष्वर कपा जिनका सबसे बड़ा जीवन सम्बल रहा हो, ऐसे त्यागी, योगी, ऋषि का जीवन चरित्र दुनिया का कोई भी व्यक्ति बिना पूर्वाग्रह के पढ़ले तो बरबस कह उठे कि दयानन्द कोई साधारण व्यक्ति नहीं देवता था।

महर्षि की महानता के संबध में देष–विदेष के अनेक विद्वानों ने, आचार्यों, नेता, सन्तों ने जो विचार व्यक्त किए वे यथार्त हैं।

आज समाज महर्षि को उतना नहीं जानता, उन्हें उस रूप में नहीं पहचानता जितना महर्षि थे। इसका एक महत्वपूर्ण कारण यही रहा कि महर्षि की कार्यषैली पूर्ण रूपेण परमार्थ व सर्वहिताय थी। वे भटके हुए समाज को सत्य की राह दिखाना चाहते थे अपने को पीछे रख उद्देष्यों को सदैव आगे रखते थे।

पद, पैसा, परिवार से वे बहुत दूर थे। इसी कारण आर्य समाज की स्थापना करने वाले महर्षि ने अपने पास कोई पद नहीं रखा मात्र एक सदस्य के रूप में उनका नाम अंकित हुआ। अपनी अन्त्येष्टि व पष्चात किए जाने वाली क्रियाओं के संबंध में भी जो इच्छा उन्होंने व्यक्त की थी उसमें साधारण व्यक्ति के समान सारे कार्य सम्पन्न करने का निर्देष था।

महर्षि के उद्देष्य जन साधारण की उन्नति करने, सामाजिक व आध्यात्मिक अज्ञानता, पाखण्ड, कुरीतियां दूर करने का था। कालान्तर में महर्षि के इन विचारों का प्रभाव समाज पर, राष्ट्र के अनेक नेताओं, विचारकों, लेखकों पर हुआ और उसे सबने स्वीकार किया। परिणाम स्परूप महर्षि के विचारों को विधि में स्थान मिला और आज अधिकांष बातों पर कानून बन चुका है।

महाभारत काल के पष्चात किसी को ऋषि के रूप में पाया तो वो हैं दयानन्द, बड़े से बड़े प्रलोभन को ठुकराकर सत्य पर अटूट विष्वास रखने का कोइ उदाहरण दिया जावे तो वह है महर्षि दयानन्द, अनेक बार प्राणों को भी दांव पर लगाकर परमार्थ में सतत लगे रहने का स्वामी दयानन्द का है।

ये सारी बातें कपोल–कल्पित नहीं सत्य है। महर्षि दयानन्द एक आन्दोलन का नाम है वह आन्दोलन जिसने कुरीतियों को नष्ट करने का शंखनाद किया, विरोध में जमाना खड़ा था, किन्तु बिना किसी भय के समाज में व्याप्त इन कुरीतियों का डटकर मुकाबला किया, बाल विवाह, दहेज प्रथा, बलि, छुआछूत जैसी सामाजिक बुराईयों का सर्वप्रथम विरोध करने वाले महर्षि दयानन्द ही थे। बाद में इसे देष के अनेक नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, विचारकों ने स्वीकार किया। और उस पर आज कानून बन गये हैं।

शूद्र व नारी जाति को षिक्षा का अधिकार दिलाने की पहल सबसे पहले महर्षि दयानन्द ने की। देष का पहला कन्या गुरूकुल और कन्या पाठषाला प्रारंभ करने का श्रेय स्वामी दयानन्द के अनुयायी आर्य समाजी सज्जनों को ही है।

हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के प्रयास में सर्वप्रथम नाम महर्षि दयानन्द का ही है। गौवध बन्द हो इसके लिए अंग्रेजी हुकूमत के समक्ष महर्षि ने आन्दोलन प्रारंभ कर दिया था और लगभग विदेषी भी महर्षि की बात से सहमत हो रहे थे दुर्भाग्य से वह बात आगे न बढ़ सकी।

महर्षि दयानन्द जिज्ञासू ज्ञान पिपासू थे, सच्चे ईष्वर की खोज उनका जीवन उद्देष्य था। इस प्रयास में दर–दर भटके, पहाड़, नदी–नाले, बारिस, गर्मी सर्दी, भूख–प्यास उनको रोकने का प्रयास तो करती पर रोक न सकी। जीवन् में सैकड़ों सन्तों, योगियों से संबंध जोड़ा, हजारों, पुस्तकों, ग्रंथों का अध्ययन किया, अन्त में प्रभु कृपा से सच्चे गुरू के रूप में दण्डी स्वामी विरजानन्द को पाकर उस लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग ढूंढ़ लिया जो जीवन उद्देष्य था।

समाज धर्म के नाम पर पाखण्ड में फंसा हुआ था मनुष्य कृत पुस्तकों के आधार पर ही धर्म का स्वरूप समझा जा रहा था किन्तु धर्म का आधार परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद के मर्म को समझा उसकी महानता से परिचय होने पर फिर महर्षि ने सर्वोच्च ज्ञान वेद को जीवन में आत्मसात किया और जीवन भर उसकी पुर्नस्थापना में अथक प्रयास किया।

महर्षि का ज्ञान समाज पर यह बहुत बड़ा उपकार है। महर्षि का मानना था कि वेद जो ईष्वरीय ज्ञान है वही सत्य है, पूर्ण है, सर्वहिताय व सर्वकालिक है। जाति वर्ग भेद, सम्प्रदाय मजहब की सीमाओं से हटकर मनुष्यमात्र के लिए है। इसलिए संसार का कल्याण इसी के माध्यम से हो सकता है, समाज का संगठन इसी के द्वारा संभव है। आज संसार में लाखों नहीं करोड़ों व्यक्ति वेद को समझने लगे लुप्त प्रायः सनातन ज्ञान पुनः समाज के सम्पर्क में आ गया।

भारत ही नहीं अपितु दुनिया के अनेक देषों में वेदऋचाएं गूंज रही हैं, वैदिक मन्त्रपाठ हो रहे हैं यह सब महर्षि की ही कृपा है।

संसार के सभी व्यक्ति कहते हैं आगे बढ़ों महर्षि ने कहा "वेदों की ओर लौटों"।

इसीलिए महर्षि को वेदों वाला और वेदों के पुर्नद्धारक के रूप में जाना जाता है।

आध्यात्मिक दृष्टि से वेदों का प्रचार महर्षि का आध्यात्मिक आन्दोलन था। इसके अन्तर्गत अनेक कपोल कल्पित, पाखण्ड मण्डित मान्यताओं का भी स्वामी ने विरोध किया। ईष्वर के नाम पर बलि, शराब, भांग–गांजा इसे पाखण्ड बताया। पाप का शमन किसी प्रकार के जप, पूजा–पाठ से, तीर्थ स्नान से होगा यह भी गलत बताते हुए कर्म फल की प्रधानता का प्रचार किया।

ईष्वर एक है, सर्वव्यापक है, निराकार है, कर्मों का फल देने वाला है, उसी की उपासना करनी चाहिए। इस प्रकार से व्यक्ति पूजा पर बहुत कुछ रोक लगी।

ईष्वर विष्वासी, धर्म को प्राणों से अधिक महत्त्व देने वाले स्वामी दयानन्द ने सोते हुए भारतियों को 1857 से ही स्वदेष का मन्त्र पाठ करवाना प्रारंभ कर दिया था।

स्वतंत्रता की मंगल पाण्डे की योजना 1857 में फेल हो गई थी किन्तु अंग्रेजी हुकूमत ने पुनः कोई स्वतन्त्रता की चर्चा न करे इसलिए एक चाल चली और भारतियों को प्रसन्न करने के लिए तथा ब्रिटिष साम्राज्य में ही उनका हित है जताने के लिए कई आकर्षित करने वाली घोषणाएं की। भारतवासी अंग्रेजों की इस चाल को समझ नहीं पाए और उनके प्रति सद्भाव रख अंग्रेजी हुकूमत रहने में ही अपनी उन्नति समझने लगे।

ऐसे समय में भारत का पहला कोई व्यक्ति था जिसने अंग्रेजों की इस चाल व उसके परिणाम को गंभीरता से समझा व इससे सचेत किया। महर्षि ने 1857 में ही अंग्रेजों की इस लुभावनी घोशणा के पष्चात यह लिखा कि – **कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत– मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।**

स्वदेष के प्रति भावना का संचार बड़ी बहादुरी से महर्षि ने सर्वप्रथम किया, इस बात को सन् 1940 में डॉ. श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने भी दिल्ली में एक महती सभा के संबोधन में किए। स्वदेषी वस्तुओं को अपनाने व विदेषी वस्तुओं के त्याग का प्रचार किया, इसका व्यापक प्रभाव हुआ। महर्षि देष आजाद करवाना चाहते थे इसलिए उनका प्रयास तीव्र होता गया, जैसे–जैसे यह वैचारिक गति बढ़ी क्रान्तिकारी विचारों की संख्या बढ़ने लगी। परिणाम स्वरूप अंग्रेजी हुकूमत स्वामी दयानन्द से खौप खाने लगी, उन्हें बागी फकीर के नाम से पुकारते।

स्वामीजी के इस राष्ट्रीय आन्दोलन में रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे भी स्वामीजी से मिले व मार्गदर्षन प्राप्त किया। देष की आजादी में नरम दल व गरम दल के अधिकांष प्रभावषाली नेता व क्रान्तिकारी स्वामी दयानन्द की प्रेरणा की ही देन है।

– प्रकाश आर्य

महू

शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली)

– **पं. सुरेशचन्द्र शास्त्री,** उपदेशक

धर्मप्रेमी सज्जनों, हम सब बड़े ही सौभाग्यशाली हैं, जो कि हमने पवित्र देवभूमि भारत देश में जन्म लिया है। भारत देश त्यौहारों का, पर्वों का देश है, यहां पर प्रत्येक माह में कई–कई त्यौहार तक आ जाते हैं। प्रत्येक पर्व मनाने के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य रहता है। पर्व का अर्थ जोड़, गांठ भी है और क्षति पूर्ति करना भी है। हमारे जीवन में दिनरात की दौड़ धूप से जब हम थककर निराश हताश हो जाते हैं तब यह उत्सव यह त्यौहार आकर हमारे जीवन में उत्साह भर देते हैं, उल्लास से पूरित कर देते हैं। जैसे गन्ने में तथा बांस में गॉठें मिठास और दृढ़ता को देती हैं वैसे ही यह पर्व ऊर्जा नवीनता, स्फूर्ति, कार्य करने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं। दीपावली का यह त्यौहार वर्ष भर के सभी त्यौहारों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हमारा भारत देश कृषि प्रधान देश है, हमारे देश की लगभग 70 प्रतिशत जनता गांवों में निवास करती है, इस समय जब किसान की छह माह की मेहनत का फल घर में आता है। अनाज से घर भर जाता है। जिसे देखकर कृषक खुशी से उछलने लगता है और प्रसन्नता को प्रकट करने के लिए घी के प्रज्जवलित दीपों से घर को सजाता है। भारतीय संस्कृति त्याग और समर्पण का समर्थन करती है इसीलिए अनाज को उपयोग में लेने से पूर्व त्याग के प्रतीक के रूप में यज्ञ भगवान को लाजा की आहुति के रूप में समर्पित किया जाता है। इसे नवसस्येष्टि कहते है। होली को बासन्ती नवसस्येष्टि और दीपावली को शारदीय नवसस्येष्टि कहते है। दीपावली मनाने का दूसरा उद्देश्य यह भी है कि वर्षा के कारण घरों में सीलन हो जाती है मकड़ी, मच्छर, कीड़े–मकोड़े बढ़ जाते हैं तथा दुर्गन्धि युक्त वातावरण होने से रोग फैलने लगते हैं। इसीलिए साफ–सफाई तथा घरों की लिपाई पुताई करके स्वच्छता को आमन्त्रित किया जाता है। लक्ष्मी का स्वागत किया जाता है। स्वच्छता से मन प्रसन्न तथा तन भी पुलकित और स्वस्थ रहता है। स्वच्छता धन की सौगात लेकर आती है। स्वच्छता का ही दूसरा नाम लक्ष्मी, श्री शोभा आदि है, इसीलिए वातावरण को पवित्र और आरोग्य कारक बनाने के लिए दीपावली पर वृहद यज्ञ प्रत्येक घर में करने चाहिए। दीपकों में भी गौघृत का प्रयोग करना चाहिए, घी के अभाव में सरसों के तेल का उपयोग करें। ठीक इसी तरह आध्यात्मिक क्षेत्र में योगाभ्यास के द्वारा ओ3म् नाम के दीप से, तथा आत्मज्ञान से अन्तःकरण को प्रकाशित करें। अविद्या रूपी अन्धकार का नाश करके, शुभ कर्मों की सुगन्धि से मानसिक, बौद्धिक प्रदूषण को दूर करें। जैसे दीपावली के सघन अन्धकार को भी दीपकों के प्रकाश से नष्ट करके रात्रि को प्रकाशित और सुगन्धित कर दिया जाता है। छोटे–छोटे दीपक जब मिलकर पंक्तिबद्ध होकर प्रकाश पुंज बन जाते हैं तब वे बड़े से बड़े अन्धकार को भी नष्ट करने में समर्थ हो जाते हैं। दीपावली के इस पवित्र त्यौहार पर हम सब भी मिलकर समाज में फैली विकृतियों, भ्रान्तियों को समाप्त कर राष्ट्र को समृद्ध और सशक्त बनाने का संकल्प लें। दीपावली के इस पर्व को पवित्रता और उल्लास के साथ मनायें, साथ ही यह भी ध्यान रहे कि वातावरण को दूषित करने वाले विस्फोटक पदार्थों का स्वयं भी प्रयोग न करें तथा औरों को भी समझायें।

श्रद्धांजलि

असंख्य बुझे दीपों में, जो तेल बाती बन जीता रहा।
प्रज्वलित करने दीपों को, तिल–तिल नित जलता रहा।।
लिए ओउम् पताका कर में, कईबार मौत को ललकारा।
अदम्य साहस का प्रतीक, वह गुरूवर ऋषि दयानन्द प्यारा।।

बुझाकर खुद को भी, रोशनी जमाने में वो कर गया।
आया नहीं कोई पल, मौत से जब वह डर गया।।

एहसानों का हिसाब नहीं, कम पड़ जावें, फलक के तारें।
ले लिए जमाने के जिसने, खुद पर संकट सारे।।

पर उसकी नसीहत को, कौन कितना मान रहा।
गुरूदत्त, श्रद्धानन्द, अमीचन्द सा, दिखता अब शिष्य कहाँ।।

हर किसी पर उसका है एहसान।
ऋणों से दबा है, सारा जहान।।

किन्तु, कृतज्ञ बन नहीं पाऐ, कृतघ्न बनते जा रहे।
बोया तो था आम उसने, पर बबूल के फूल आ रहे।
पर, सभी तो जगन्नाथ नहीं, कुछ तो ऋषि के हैं प्यारे।
चल रहा संगठन आज भी, उन्हीं के सहारे।

मात्र औपचारिकता में लिपटी, श्रद्धांजलि तो एक पाप है।
अपने गुरूवर के साथ, खुला ये विश्वासघात है।।

ऋषि का बलिदान सन्देश था महान,
विश्व को श्रेष्ठ बनाने का था आव्हान,

आर्यों, उसे आत्मसात करना जरूरी है।
वर्ना उसके प्रति श्रद्धांजलि अधूरी है।।
कार्य अधूरा पड़ा गुरूवर का, उसे पूरा है करना,
उसी के बताए पथ पर, निरन्तर आगे है बढ़ना।

देख रहा जमाना तुम्हें, आशा भरी निगाहों से,
गुजरना पड़ेगा यद्यपि, कंटकाकीर्ण राहों से,
तो आओ आज फिर संकल्प करें,
अग्नि परीक्षा देकर भी, निज कर्तव्यों को पूरा करें।
जब गुरूवर के बताए पथ, हम चलने लगेगें,
तभी सही अर्थों में हम सच्चे आर्य खुद को कहेगें।।

यह विश्वास जब आर्यजन में "**प्रकाश**" आवेगा।
तभी गगन मण्डल पर, वैदिक ध्वज लहरावेगा।।

— प्रकाश आर्य, महू

विदुर नीति

(महाभारत उद्योग पर्व से)

द्वावेव न विराजते विपरतेन कर्मणा।
गृहस्थश्च निरारम्भः कार्यवांश्चैव भिक्षुकः।।

— प्रथम अध्याय / श्लोक 62

दो ही अपने विपरीत कर्म के कारण शोभा नहीं पाते। अकर्मण्य गृहस्थ और प्रपंच में लगा हुआ सन्यासी।

भर्तृहरि शतक

(नीति शतक)

मृग मीन सज्जनानां तृण जल सन्तोष विहीत वृतीनाम्।
लुब्धक धीवर पिशुना निष्काणमेव वैरिणो जगति।।

— श्लोक 61

संसार में मृग व मछली क्रमशः घस खाकर व जल पीकर रहते हैं, तो भी शिकारी, बहेलिया मछुहारे द्वेष रखते हैं, वैसे ही सज्जनों से दुर्जन अकारण ही बैर रखते हैं।

प्रस्तोता : राजेन्द्र व्यास, उज्जैन

तीर्थ स्नान क्या ?

– प्रकाश आर्य, महू

जीवन में अज्ञानरूपी अन्धेरा जीवन दर्शन को छिपा देता है। उसका ही परिणाम होता है मनुष्य किसी बात से, जैसी वह है उसे वैसा नहीं देख पाता और भटक जाता है।

मानव जीवन में अनेक विचारधारा और मान्यताएं ऐसी हैं जिनके सही स्वरूप से हमारा परिचय नहीं है किन्तु उसके नाम से प्रचलित विचारधारा में हम विश्वास करके जी रहे हैं। इस विषय पर सबसे पहले हम तीर्थ पर विचार करते हैं। तीर्थ को हम कैसे मान रहे हैं और मानना कैसे चाहिए।

तीर्थ का अर्थ हम किसी पवित्र नदी, कुण्ड, जलाशय या प्रवाहित किसी धारा में स्नान करने को समझते हैं।

हमारी मान्यता है कि ऐसी किसी धार्मिक भावना से प्रसिद्ध नदी, कुण्ड, सरोवर में स्नान कर लेने से पुण्य मिलता है, पाप दूर हो जाते हैं, जीवन पवित्र हो जाता है।

इतना ही नहीं हमारे पूर्वज जो अब इस संसार से बिदा ले चुके हैं, कहीं जन्म ले चुके हैं, देह त्याग चुके हैं उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी आस्थियॉ (चिता में जलाकर बची राख व कुछ हड्डियों के टुकड़े) जिन्हें फूल भी कहते हैं यदि उनको पवित्र नदी में, तालाब में डाल दिया जावे तो उन दिवंगत व्यक्तियों को भी मुक्ति मिल जाती है, ऐसी भी मान्यता है।

फिर किसी खास समय, विशेष दिन या पर्व पर स्नान करने का तो और भी बड़ा महत्व है। ग्यारस, अमावस्या, पूर्णिमा आदि ऐसे दिनों में स्नान का बड़ा भारी महत्व बताया गया है।

वास्तव में आज दुनिया में सबसे बड़ा व्यापार धर्म की आड़ में धर्म के नाम पर चल रहा है। धर्म के नाम पर कोरी आस्था व विवेक हीन मान्यता चल रही है इसमें ज्ञान व तर्क को कोई स्थान नहीं है। धर्म और ईश्वर को लेकर मानव समाज में प्रायः भेड़ चाल दिखाई देती है।

इसका लाभ लेने के लिए धर्म के नाम पर वास्तविकता से हटकर अपने लाभों की प्राप्ति के लिए तीर्थ का महत्व बढ़ा–चढ़ाकर बताया गया और मात्र जल स्नान से ही सारे पाप, दुःख कष्टों से मुक्ति और पुण्य प्राप्ति बता दी। किन्तु ज्ञान से रिक्त धार्मिक आस्था में बहकर पुण्य कमाने का सरल, सस्ता, बिना जीवन पवित्रता के, कर्मों के फल की अव्हेलना करके यह मार्ग सबको सहज लगा और इसके प्रति जन सामान्य आकर्षित हो गया। एक महत्वपूर्ण बात है इस पर ध्यान देवें, ज्ञान विहीन मान्यता, अन्ध श्रद्धा है वह कभी लाभकारी नहीं होती, भ्रम में ही भटकाते रहती है।

इसलिए तीर्थ स्थान मानने के पहले हम तीर्थ का अर्थ समझ लें कि तीर्थ किसे कहा –

जनः येन तरति तत् तीर्थम जिससे जीवन तर जावे, जीवन उन्नति हो जावे वह तीर्थ है।

यह जीवन दो तत्वों से बना है, एक शरीर, दूसरा आत्मा।

शरीर जड़ है वह स्वयं कुछ नहीं कर सकता, शरीर के अंग आत्मा के बिना कोई महत्व नहीं रखते, उनका अस्तित्व ही नहीं रह सकता। शरीर सेवक और आत्मा स्वामी है। सुख–दुःख–मोक्ष का संबंध शरीर से नहीं आत्मा से है, किए गए प्रत्येक कर्मों का फल जन्म–जन्मान्तरों तक आत्मा को भोगना होता है। कर्मों का फल इसी जन्म में भोग कर समाप्त नहीं होता किन्तु शरीर का अस्तित्व कुछ काल के लिए होता है और आत्मा कभी मरती ही नहीं, उसकी यात्रा अनन्त है। यात्रा अनन्त होने से ही वह कर्म फलों को कई जन्मों तक भोगती है। कर्म का संबंध आत्मा से है शरीर से नहीं। शरीर तो स्वामी (आत्मा) के लिए कार्य करता है। जैसे सेठ की ओर से काम करने वाले नौकर को व्यापार की लाभ हानि से कोई मतलब नहीं होता। काम भले ही वह करे किन्तु हानि का संबंध मालिक से होता है। इसलिए वैसे ही कर्मफल शरीर नहीं आत्मा भोगती है।

जीवन उन्नति ज्ञानमय, स्वाध्याय, सत्संग से, सतकर्मों से होती है और यह विषय आत्मा का है, शरीर का नहीं। इसलिए पाप पुण्य का माध्यम आत्मा है शरीर नहीं। आत्मा तो शरीर से काम करवाती है, धर्म, अधर्म करने का माध्यम शरीर है परन्तु आदेश आत्मा देती है।

आत्मा शुद्ध, पवित्र और ज्ञानयुक्त होने से ही जीवन का उद्धार होगा, जीवन उन्नत होगा, धर्म की ओर प्रेरित होगा, पुण्य की प्राप्ति होगी।

अब विचार करें जल स्नान से शरीर स्वच्छ होगा या आत्मा ?

संसार के महान विचारक, धर्मवेत्ता आचार्य मनु कहते हैं –

अर्द्भिगात्राणि शुध्यति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्या तपोभ्यां भूतात्मा, बुर्द्धिज्ञानेन शुध्यति।।

अर्थात् – पानी से शरीर, सत्यता से मन, विद्या और तप से आत्मा तथा सत्य ज्ञान से बुद्धि की शुद्धि होती है। वस्त्र, वस्तु, शरीर की बाहरी शुद्धि तो पानी से हो सकती है किन्तु आत्मिक शुद्धि का तो कुछ और तरीका बताया है। पानी को तीर्थ मानने वालों को श्री भागवत पुराण 85 स्कंध श्लोक 10 में गधा कहा गया है।

विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक आचार्य चाणक्य कहते हैं –

तीर्थेषु पशुयज्ञेसु काष्ठ पाषाण मृण्मये।
प्रतिमायां मनोयेषां ते नराः मूढ़ चेतसः।।

कहा गया, जल तीर्थ को ही सबकुछ मानने वाले व्यक्ति मूर्ख से भी मूर्ख हैं।

यह भी महत्वपूर्ण बात ध्यान देने योग्य है – मनुष्य को उसके द्वारा किए गए शुभ या अशुभ कर्म का ही फल भोग के रूप में प्राप्त होता है और वह भोग जब तक भोगना पड़ते हैं जब तक उनके फल पूरे न हो जावें।

हमारे कर्मों के अनुसार उन कर्मों के फल देना ईश्वर का कार्य है। ईश्वर का कार्य पूर्ण निष्पक्ष तथा त्रुटि रहित है उसमें कोई भी किसी भी प्रकार का परिवर्तन या हस्तक्षेप नहीं कर सकता। फिर स्नान पूजा–पाठ से उसके न्याय में अन्तर नहीं आ सकता उसकी न्याय व्यवस्था अटल है।

परन्तु तीर्थ का बड़ा महत्व है परन्तु तीर्थ वही जिससे आत्मा की बद्धि, ज्ञान वृद्धि, पाप कर्मों से मुक्ति, पुण्य के प्रति भावों का सृजन हो। यह ज्ञान, स्वाध्याय, सत्संग से संभव है, कहा गया –

सत्संग परं तीर्थं, सत्संग परं पद्म।
तस्मात् सर्वं परितज्य स संस सततं कुरू।।

सत्संग तो परम तीर्थ है परम् स्थान है, उसे कभी छोड़ना नहीं चाहिए। ऐसा क्यों कहा, इस पर ध्यान देना चाहिए। सत्संग से सत्य मार्ग, सत् ज्ञान की प्राप्ति होती है, आत्मोन्नति होती है इसलिए इसे तीर्थ कहा।

सत्य तीर्थं, क्षमा तीर्थं तीर्थं मिन्द्रिय निग्रह,
सर्वभूत दया तीर्थं, तीर्थ मार्जमेव च,
ज्ञान तीर्थं तपस्तीर्थं कथितं तीर्थं सप्तकं।

अर्थात् – सत्य बोलना, क्षमाशील होना, कर्मेद्रिय व ज्ञानेन्द्रियों को वश में रखना, सब प्राणियों पर दया, सरलता का जीवन ज्ञानमय व तपस्वी जीवन में सात प्रकार के तीर्थ है।

कहीं पर भी जल स्नान को तीर्थ नहीं कहा गया। किन्तु हम न जाने किस मान्यता व अन्ध श्रद्धा में पानी के स्नान को ही तीर्थ समझकर भटक रहे हैं।

नदी, पहाड़, जंगल, ये स्वास्थ और प्रसन्नतादायक है। इन स्थानों पर स्वमेव, मन पर आध्यात्मिक वातावरण निर्मित होता है। किन्तु उन स्थानों पर जाने से ही नहीं, उन स्थानों पर जाकर एकान्त में ध्यान, तप, स्वाध्याय, सत्संग करके जीवात्मा की उन्नति करने से उनका लाभ है।

नदी स्नान करने से ही यदि पापों से, कष्टों से मुक्ति मिल जाती तो उसके किनारे पर रहने वाले तो कष्टों से दूर और स्वर्ग प्राप्त करेगें वे

दुःखी क्यों रहेगें ? किन्तु ध्यान से जाकर देखिए, प्रायः तीर्थ स्थानों पर रहने वाले दुकानदार, पण्डे, पुजारी, कितने ठग होते हैं इसका अनुमान वहां जाकर लगता है। जो नित्य प्रति उस पवित्र नदी के पानी का उपयोग खाने–पीने, नहाने में कर रहे हैं उनकी आत्मा शुद्ध नहीं हुई तो एक–दो बार स्नान से आपको लाभ मिल जावेगा, यह सोचना कहां तक उचित है ?

हॉ नदियों का, तालाबों का स्वच्छ जल जो वनस्पतियों व खनिजों से युक्त है, उसके स्नान से स्वास्थ को लाभ अवश्य मिलता है, इसलिए उनका स्नान शरीर के लिए लाभदायक है किन्तु आत्मोन्नति के लिए किंचित भी नहीं।

स्वामी दयानन्द –

मुस्लिम जज के बंगले पर व्याख्यान

इस बार जब स्वामी काशी में आये तब सार सैयद अहमद खॉ वहां के सब जज थे। उन्होंने अपने बंगले पर स्वामी का व्याख्यान कराया जो ईश्वर की प्राप्ति के संबंध में था। उन्होंने ही स्वामीजी को काशी के कलेक्टर मिस्टर सेक्सपीयर से भी मिलवाया जो स्वामीजी से मिलकर और धर्म संबंधी वार्तालाप करके बड़े प्रसन्न हुए। सभी विद्वान स्वामीजी की विद्वता पर मुग्ध थे।

एक अद्‌भुत कौतुक

एक दिन स्वामी ध्यान से निवृत्त होकर हंसते हुए बाहर आये। पं. सुन्दरलाल ने हंसने का कारण पूछा तो स्वामीजी ने कहा कि थोड़ी देर ठहरिये मैं आपको एक कौतुक दिखाऊँगा। एक आदमी मेरी ओर आ रहा है। थोड़ी देर बाद एक मनुष्य आया और उसने कुछ मिठाई स्वामीजी के आगे रखकर खाने की प्रार्थना की। स्वामीजी ने कहा कि थोड़ी सी मिठाई तुम भी ले लो। पहिले तुम्हें ही खानी पड़ेगी। यह सुनकर वह कॉपने लगा, क्योंकि वह मिठाई विषक्त थी। पं. सुन्दरलाल ने उस आदमी को पकड़ा, परन्तु स्वामीजी ने उसे छुड़वा कर क्षमा कर दिया। फिर उसमें से थोड़ी सी मिठाई एक कुत्ते को खिलाई। कुत्ता चक्कर खाकर गिरा और तुरन्त मर गया।

क्या अद्‌भुत कौतुक था ? स्वामीजी ने पहले जान लिया, विष पूरित मिष्ठान्न बिना देखे पहचान लिया।

रावण नहीं मरा

रावण को मारा है, आज रावण को मारा है।
हर गलियों और चौराहों पर, ये ही नारा है।।

वह तो दूसरा ही युग था, जब रावण था एक।
आज तो यह कलियुग है, जब रावण हुए अनेक।।

कृत्य राक्षसी आज रात दिन, होते रहते हैं।
नहीं जटायू से कोई अब प्रहरी, सब सोते रहते है।।

नहीं कोई लाज बचाने जाता, कुकृत्य सभी होते रहते है।
दुष्टों से कर लेते दोस्ती, और खुश होते रहते है।।

छद्म देशधारी रावण से, हर सीता खतरे में है।
रावण मरा नहीं है आज, वो तो कतरे–कतरे में है।।

रावण को तो दिल में बसाया, पुतला आज जलाते हैं।
खुद ही रावण बनकर के, रावण मरा बताते हैं।।

रावण घूमता दिखता है, अब रथ की जगह कारों से।
सीता भी हर ली जाती है, देखों भरे बाजारों से।।

नहीं राक्षस पहले ही थे, आज भी हैं हजारों से।
सभ्य मानव मरते रहते, लुटेरे हत्यारों से।।

सभी राक्षस बनते जाते, रावण को मारेंगे क्यों ?
सारी बस्ती राक्षस नगरी, राम राज आयेगा क्यों।।

जब तक दशरथ और न होंगी कौशल्या जैसी माँ।
तब तक पैदा हो नहीं सकते राम यहाँ।।

– आर्य पी. एस. यादव, मण्डीदीप

मेरा भारत महान, मेरा भारत महान

क्योंकि यह वह भारत है।
जहां **सर्वांगीण विकास** संभव है।
जहां **संसार का श्रेष्ठ जल** गंगा बहाती है।
जहां **प्राकृतिक सम्पदा** के अथाह भण्डार भरे पड़े है।
जहां **प्राकृतिक सौंदय** की अनुपम छटाऐं बिखरी पड़ीं है।
जहां विश्व की **सबसे प्राचीनतम संस्कृति** अस्तित्व में है।
जहां विश्व में **सबसे सुन्दर ऋतुऐं** बदल बदल कर आती है।
जहॉ से विश्व को **योग, शून्य, आयुर्वेद एवं वैदिक ज्ञान** मिला।
जहां विश्व में आदर्श राज्य स्थापित करने वाले **श्री रामचन्द्र जी** जनमें।
जहॉ विश्व में जगत गुरू कहे जाने वाले **योगीराज श्री कृष्णचन्द्रजी** जनमे।
जहॉ विश्व के श्रेष्ठ मनीषियों ऋषियों महर्षियों ने अपने **तत्व ज्ञान** को बिखेरा।
जहॉ का श्रेष्ठ **वैदिक ज्ञान ही विश्व में शान्ति स्थापित करने का एकमात्र साधन** है।
जहॉ विश्व की अतुल संपदा संजीवनी व असंख्य रहस्यों को समेंटे **महान हिमालय** है।
जहॉ सीमित शक्ति से भी विधर्मी सम्राटों से लोहा लेने वाले **छत्रपति शिवाजी** हुए।
जहॉ **महाराणा प्रताप सिंह** जैसे विधर्मियों के सामने न झुकने वाले शूरवीर हुए।
जहॉ की संस्कृति में **यत्र पूज्यन्ते नार्यस्तु रमन्ते तत्र देवता** कहा जाता है।
जहॉ **संस्कृति एवं ज्ञान** मनुष्य बनाती एवं देवता तक ले जाती है।
जहां की **वैज्ञानिक प्रतिभाओं** का लोहा अमेरिका भी मानता है।
जहां पर **वसुधैव कुटुम्बकम** की भावना सिखाई जाती है।
जहॉ केशरी नन्दन अंजनी पुत्र **हनुमान जैसे वीर** हुए।
जहां **महर्षि दयानन्द** जैसे युग प्रवर्तक पैदा हुए।
जहॉ पर ऐसी **अनगिनत विशेषतायें** है।
ये न **केवल विचार** हमारा है।
यहॉ **सचमुच** यह सब है।
इसी लिये **हमें बहुत प्यारा** है।
इसी पर न्यौछावर है सौ सौ जान।
मेरा भारत महान, मेरा भारत महान, **मेरा भारत महान।**

– आर्य पी. एस. यादव, मण्डीदीप

बोध कथा –

कौन बड़ा

एक बार वाणी, चक्षु, कान, मन और प्राण में अपनी–अपनी श्रेष्ठता को लेकर विवाद छिड़ गया। हर कोई अपने को बड़ा कहता व्था। काफी समय इसमें ही गुजर गया। फिर भी इस प्रश्न का हल नहीं हुआ।

फिर इन्द्रियों ने कहा – इस विवाद का निपटारा करने के लिए प्रजापति के पास चलना चाहिए। वह इसका समाधान कर देगें। इन्द्रियाँ प्रजापति के पास पहुँची।

इन्द्रियों ने विवाद की जानकारी प्रजापति को दी। प्रजापति बोले – तुम में से जिसके न रहने पर शरीर माटी हो जाए, वही सर्वश्रेष्ठ है।

सबसे पहले वाणी ने शरीर को छोड़ दिया। फिर भी शरीर की गतिविधियों में खास फर्क नहीं आया। सालभर बाद वाणी लौटी, उसने देखा, सोचा – मुझ वाणी के न रहने पर भी शरीर पहले की तरह कार्य कर रहा है। उसका चेहरा लटक गया।

अब चक्षु ने शरीर छोड़ा। उसके न रहने पर मनुष्य को दिखाई देना बन्द हो गया। साल बीता, चक्षु ने देखा – शरीर सामान्य है। सोचा मेरे न रहने पर आदमी को विशेष फर्क नहीं पड़ा, मन मारकर उसने दोबारा शरीर में प्रवेश किया।

अब कान ने शरीर छोड़ा। फिर भी शरीर पहले सा ही रहा। साल भर बाद कान लौटा तो हैरान था, कारण शरीर की गतिविधियाँ ज्यों की त्यों थीं। उसने पूछा – मेरे बिना तुम जिन्दा कैसे रहे ?

जैसे बहरा आदमी रहता है। आदमी बोला।

फिर मन ने शरीर को छोड़ा, एक साल बाद लौटा तो उसे जवाब मिला, बच्चे मन के न रहने पर सिर्फ मानसिक विकास नहीं कर पाते, लेकिन अन्य कार्य तो करते हैं। यह सुन मन भी मन मारकर शरीर में जा बैठा।

जब बारी आयी प्राण की, वह शरीर से निकलने लगा तो इन्द्रियाँ डगमगाने लगीं। शरीर खतरे में पड़ गया। इन्द्रियाँ घबरा गई। उन्होंने प्रार्थना की – प्राण आप हमें छोड़कर न जाएँ, आप चले गए, तो हमारा क्या होगा ? आप ही हममें सर्वश्रेष्ठ हैं।

प्राण ने कहा – ठीक है, अब मैं शरीर नहीं छोड़ूँगा। यह सुन इन्द्रियों ने चैन की साँस ली।

प्रेरणा का स्त्रोत

दीपावली पर्व

– डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

हमारा देश पर्वों का देश है वर्ष में किसी न किसी रूप में हम इन्हें मनाते रहते हैं। मुख्य रूप से यह त्यौहार मनाने का कारण महापुरूषों से संबंधित किसी घटना के कारण, ऋतु परिवर्तन के समय पर अथवा राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक धारणाओं के कारण या नई फसलों के आने पर मनाए जाते हैं।

पर्व मनाने का जब तक उस पर्व का हमारा मनाना मात्र ऊपरी दिखावा ही होगा। सही कारण ना जानने से कहीं–कहीं उसमें विकृति आ रही है हम शुभ अवसर पर अशुभ या अनुचित कृत्य करने लगे हैं। जैसे होली पर शराब, भांग का सेवन, रंग के स्थान पर कीचड़, डामर, रंग, पेन्ट आदि क्षति कारक पदार्थों का प्रयोग। इसी प्रकार दीपावली पर जुआ खेलने का प्रचलन।

वर्ष में बारह पूर्णिमा और बारह अमावस्यो होती है। अश्विनी पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) को चन्द्रमा का सबसे अधिक प्रकाश होता है तथा कार्तिक अमावस्या (दीपावली को सबसे अधिक घना अन्धकार होता है) घने अन्धकार को दूर करने का प्रयत्न मनुष्य दीपमाला (दीप पंक्ति) के द्वारा करता है क्योंकि परमेश्वर के बनाये हुए दीपक सूर्य–चन्द्रमा के सामने मनुष्य की दीपक जैसी स्थिति है।

वर्षा ऋतु के बाद जब नया अनाज कृषक के घर आता है तो वह अनाज की प्राप्ति के साधन बैल, गाय, मजदूरादि का सम्मान और पूजादि करता है। इसी प्रकार व्यापारी व्यापार में जिन कर्मचारियों के माध्यम से धन कमाता है उनका सम्मान भी इस दिन करता है जिससे वे पूरी मेहनत और निष्ठा से व्यापार कार्य में लगे रहे। धन की प्राप्ति के साधन मशीन इत्यादि की देखभाल, मरम्मत, रंग रोगनादि इस पर्व पर कराया जाता है। जिससे पूरे वर्ष तक मशीन ठीक तरह से चलती रहती है। उसी का विकृत रूप मशीनों की पूजा करना, अगबत्ती जलाना, उन पर तिलक करना, नारियल फोड़ना इत्यादि प्रचलित हो गया है। धन जिन साधनों से प्राप्त होता है। उनका तो सम्मान किया ही जाता है। किन्तु जिस परमात्मा की महती कृपा से मनुष्य अन्न और धन प्राप्त करने के योग्य बना है। उसको भी धन्यवाद देना उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मनुष्य का कर्तव्य है। इसी दृष्टि से परमात्मा की पूजा, लक्ष्मी के रूप में प्रचलित हो गई है। परमात्मा का एक नाम लक्ष्मी भी है। उसकी उपासना करना, उसके प्रति आभार प्रकट करना, उसको धन्यवाद देने का परिवर्तित रूप आंज लक्ष्मी पूजा प्रचलित हो गया है। परमात्मा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये

घर–घर में इसके विशेष यज्ञ किये जाते हैं। इसका परिवर्तित रूप यह हो गया है कि जब तक भगवान को न खिलायें, भोग न लगेगा। तब तक हमें नया अन्न नहीं खाना चाहिए। इसलिये नयी मक्का जब आती है। तब किसान सबसे पहले पांच मुट्ठी मन्दिर में भगवान के भोग के लिये ले जाता है और उसके बाद दूसरे दिन खाना प्रारंभ करता है। दीपावली को अनाज के नये दाने देवी देवताओं के सामने अग्नि जलाकर घी के साथ उन्हें इस विश्वास के साथ डालता है कि जिस भगवान की कृपा से हमें अन्न प्राप्त हुआ है, उसे भोग लगाकर खयेगें। इस तरह यज्ञ करके नया अन्न खाना शुरू करता है। इस प्रकार परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये जीवन में अन्धकार को दूर करके प्रकाश फैलाने के लिये दीपावली का पर्व मनाया जाता है।

आर्यों के लिये इस पर्व का महत्व और भी अधिक है क्योंकि इसी दिन सारे संसार में अविद्यारूपी अन्धकार को दूर करके मानव जीवन में प्रकाश फैलाते हुए युग निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने नश्वर शरीर का परित्याग किया। ईश्वर और धर्म के नाम पर छाये हुए अविद्या रूपी बादलों को दूर करके वेद विद्या और ज्ञान का प्रकाश फैलाया और इस कार्य के लिये अपना बलिदान भी कर दिया। यह पर्व हमें प्रेरणा दे रहा है कि अज्ञान, पाखण्ड अन्य विश्वास को दूर करके हम वेदों का प्रकाश फैलाने का अथक प्रयास करें। जिससे मनुष्यों का जीवन सुखदायी और वैभवशाली हो। पर्व हमें प्रेरणा, सन्देश (संबल) मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इसलिये उसे समझकर मनाना ही वास्तविक रूप से पर्वों को मनाना हैं।

राजा भर्तृहरि की दृष्टि में

रूढ़िवादी, अन्धश्रद्धा में लिप्त केवल परम्परा को ही महत्व देने वालों के लिए भर्तृहरि लिखते हैं।

प्रसह्य मणि मुद्धरेन्मकर वक्त्र दंष्ट्रांतरात्
समुद्रमपि सन्तरेत् प्रचलदूर्मिमालाऽऽकुलम्।
भुजंगमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद् धारयेत्
न तु प्रतिनिविष्ट मूर्खजनचित्तमाराधयेत्।।

भावार्थ – अपनी योग्यता से मनुष्य भले ही मगरमच्छ की दाड़ो में से मणि को निकाल ले, भले ही विशाल समुद्र की उत्ताल लहरों को चीरते हुए तैरकर पार चला जाए, कोधित विषधर को पुष्प की भांति अपने शीश पर धारण कर ले किन्तु मूर्ख पुरूष के मन को जो किसी विशेष वस्तु पर जम गया है, वहां से हटाना कठिन ही नहीं सर्वथा असंभव है।

गो मूत्र के सरलतम घरेलु औषधीय उपयोग

प्रतिदिन 50 मि.ली. भारतीय गाय का मूत्र सूती कपड़े की आठ परत कर छानकर प्रातः खाली पेट पियें। इस गोमूत्र के सेवन से एक घण्टे पहले और एक घण्टे बाद में कुछ खायें–पियें नहीं। इस प्रकार देशी गाय का मूत्र सेवन करने से पाईल्स, लकवा (पक्षघात), पथरी (मूत्र पित्त), दमा, सफेद दाग, टॉसिल्स, हार्ट अटैक (कोलेस्ट्रॉल), श्वेत प्रदर, अनियमित माहवारी, गठिया, डायबिटीज (मधुमेह), किडनी के रोग, रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), सिरदर्द, टी. बी., कैंसर आदि रोग ठीक हो जाते हैं।

जलोदर : गोमूत्र 50 मिली और आधा ग्राम हरड़ (एरंड, तेल में भुनी हुई) रात्रि को गो दुग्ध से लेने से बवासीर रोग नष्ट हो जाता है।

पाण्डु (कामला में) : गोमूत्र 50 मिली. पुनर्नवा मूल का क्वाथ 100 मिली. दोनों मिलाकर प्रातः–सायं लें। शीघ्र लाभ होगा।

जुकाम में : गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन पान करने से एवं गापालनस्य लेने से पुराना जुकाम ठीक हो जाता है।

उदरकृमि : गोमूत्र 50 मिली. 1 ग्राम अजवाइन चूर्ण के साथ प्रातःसायं सेवन करने से एक सप्ताह में कृमि नष्ट हो जाते हैं। ,

संधिवात में : (जोड़ों का दर्द व गठिया) महारास्नादि के क्वाथ के साथ गोमूत्र 50 मिली. प्रतिदिन सुबह–शाम सेवन करने से यह रोग ठीक हो जाता है।

दांत दर्द या पायरिया में : दांत व दाढ़ दर्द में गोमूत्र बहुत अच्छा कार्य करता है। जब दांत दर्द असह्य हो जाए तो गोमूत्र का कुल्ला करें। इससे बड़ा चमत्कारी प्रभाव होता है। गोमूत्र से प्रतिदिन कुल्ला करने पर पायरिया रोग समाप्त हो जाता है।

यकृत व प्लीहा की सूजन में : पांच तोला गोमूत्र में एक चुटकी नमक मिलाकर अथवा पुनर्नवा के क्वाथ में समान भाग गोमूत्र मिलाकर नियमित पीने से यकृत व प्लीहा की सूजन समाप्त हो जाती है।

चर्मरोग में : नीम, गिलोय क्वाथ के साथ दोनों समय गामूत्र के साथ सेवन करने से रक्त दोष जन्य रोग नष्ट हो जाते हैं। जीरे को गोमूत्र के साथ बारीक पीसकर लेप करने व मालिश करने से चमड़ी सुवर्ण एवं रोगरहित हो जाती है।

पाठ्यक्रम से संस्कृत हटाने का विरोध

2 अक्टूबर 2017 को सांध्यकालीन समाचार पत्र अग्निबाण के पृष्ठ 3 पर **"संस्कृत समाप्त"** शीर्षक से प्रकाशित समाचार पढ़कर आश्चर्य हुआ। म. प्र. शासन के शिक्षामन्त्री श्री विजय शाह का उक्त आदेश जारी हो चुका है, ऐसा जिला शिक्षा अधिकारी के नाम पर यह समाचार प्रकाशित हुआ है।

संस्कृत की समाप्ति आदेश दुर्भाग्यपूर्ण है तथा यह एक नितान्त अनुचित निर्णय है। संस्कृत इस देश की संस्कृति की मुख्य भाषा रही है और आज भी करोड़ों व्यक्तियों की पूजा पद्धति का आधार है।

संस्कृत विश्व की सर्वोत्तम व पूर्ण भाषा है विश्व की सबसे वृहद भाषा है। इसे देव भाषा के नाम से पुकारा जाता है। संस्कृत इस देश की संस्कृति से, संस्कारों से जुड़ी है। उसके श्रवण मात्र से ही मन को शान्ति मिलती है।

आज दुनिया के अनेक प्रगतिशील देश इसके महत्व को समझ चुके हैं और उन्होंने अपने यहां संस्कृत शिक्षा प्रारंभ कर दी है। अमेरिका की विश्व विख्यात विज्ञान शाला नासा ने भी इसे सर्वोत्तम भाषा कहा है। कम्प्यूटर के लिये पूर्ण व सुविधायुक्त भाषा इसे ही माना है।

ऐसी भाषा को शासन ने प्रोत्साहित कर इसका महत्व हर प्रकार से बढ़ाने का प्रयास करना चाहिये। हमारे हजारों धर्मग्रंथ, नीतिशास्त्र, संस्कृति के रक्षक सूत्र संस्कृत भाषा में ही हैं।

इस प्रकार संस्कृत को पाठ्यक्रम से हटाना अनुचित है। आर्य समाज इसका विरोध करते हुए अनेक आर्य समाजों ने विरोध पत्र भेजें है। शीघ्र ही सभा की ओर से प्रतिनिधि मण्डल मुख्यमन्त्री व शिक्षामन्त्री से मिलकर ज्ञापन देगें और न मानने पर आगे आन्दोलन करना जरूरी हुआ तो करेगें।

मध्य भारतीय सभा द्वारा चंबल क्षेत्र में किये गये वेद प्रचार कार्यक्रम

1. दिनांक 16/09/2017 – श्री मेघसिंह जी, ग्राम लालपुरा, भिण्ड
2. दिनांक 17/09/2017 – आर्य समाज गोरमी जिला भिण्ड
3. दिनांक 18/09/2017 – श्री बलवीरसिंह आर्य, ग्राम मोहनपुरा, भिण्ड
4. दिनांक 19/09/2017 – श्री दातारामजी, ग्राम हसनपुरा, भिण्ड
5. दिनांक 20/09/2017 – श्री हमीरसिंह जी, ग्राम प्रतापपुरा, भिण्ड
6. दिनांक 21/09/2017 – श्री मानसिंहजी आर्य, अकलोनी, भिण्ड
7. दिनांक 22/09/2017 – श्री मोहनसिंहजी आर्य, गोरमी, भिण्ड

म्यांमार (बर्मा) में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

दिनांक 6, 7, 8 अक्टूबर 2017 को म्यांमार के माण्डले शहर में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अत्यन्त उत्साह व सार्थकता के साथ सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में म्यांमार के हजारों आर्यजनों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में भारत के अतिरिक्त 7 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। म्यांमार देश में विगत 120 वर्षों से यह पहला अवसर था। कार्यक्रम का अच्छा प्रभाव बर्मा में हुआ। आर्यों में नव चेतना आई और आत्म विश्वास बढ़ा।

गुरूकुल प्रारंभ करने की योजना वहां बन गई, अनेक सहयोगी भी इस हेतु तैयार हो गये।

कार्यक्रम में वहां के मुख्यमन्त्री तथा अनेक अन्य मन्त्री, भारतीय राजदूत, कमीश्नर, मेयर, पार्षद आदि गणमान्य नागरिक, शासकीय पदाधिकारी उपस्थित हुए।

ध्वजारोहण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य ने किया तथा म्यांमार देश का ध्वजारोहण म्यांमार सभा के प्रधान श्री अशोक क्षेत्रपाल जी ने किया।

भारत से अनेक विद्वान जिसमें प्रमुख रूप से स्वामी धर्मानन्दजी (आमसेना), स्वामी देवव्रतजी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी राजेन्द्रजी, आचार्य ज्ञानेश्वरजी, डॉ. सोमदेवजी शास्त्री, आचार्या नन्दिताजी शास्त्री, डॉ. रामकृष्णजी शास्त्री, आचार्य सनत कुमार, आचार्य आनन्द प्रकाश, डॉ. सत्यकाम शर्मा, प्रो. ओमकुमार जी आर्य आदि के द्वारा सम्मेलन को सम्बोधित किया गया।

आर्य समाज विदिशा के वार्षिक चुनाव सम्पन्न

विदिशा। वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मत्ति से सम्पन्न हुये, जिसमें निम्नांकित कार्यकारिणी चुनी गयी।

जिसमें प्रधान जयप्रकाश आर्य, उपप्रधान रामस्वरूप आर्य, पुरूषोत्तम आर्य, गेन्दालाल उज्जैनियॉ, मन्त्री विश्वेन्द्र आर्य, उपमन्त्री आर्येन्द्र आर्य व अनुपम जोशी, कोषाध्यक्ष सुरेन्द्रसिंह जादौन, सहकोषाध्यक्ष सुरेन्द्र आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री सर्वोत्तम आर्य, प्रचार मन्त्री सूर्यप्रकाश आर्य, सह प्रचारमंत्री विपुल शर्मा, आर्य वीर दल अधिष्ठाता अभिनव आर्य, सह अधिष्ठाता राजकुमार आर्य, प्रतिष्ठित सदस्य श्री सीताराम आर्य, हरीश वर्मा, अशोक निगम, कार्यकारिणी सदस्य ठा. जगन्नाथसिंह आर्य, दिनेश वाजपेयी, रामकिशोर कासदे, सुरेन्द्रसिंह गुप्त, भगवान स्वरूप आर्य, अनुराग श्रीवास्तव, अतुल जौहरी, अग्निवेश आर्य, युगेन्द्र आर्य, दीपक श्रीवास्तव, हरीराम आर्य हैं।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

29, 30, 31 दिसम्बर 2017 को

प्रान्तीय सभा की अन्तरंग बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार दिनांक 29 से 31 दिसम्बर 2017 को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया है।

यह आयोजन महू में करने का सर्वानुमति से निर्णय लिया है।

सम्मेलन में आर्य समाज के स्वर्णिम इतिहास प्रस्तुति और भावी योजना बनाकर उसे मूर्तरूप देने का निर्णय, संगठन वृहद बनाने पर कार्यशाला, यज्ञ, भजन, कवि सम्मेलन, भजन संध्या, वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, युवक सम्मेलन आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जावेगा।

अतः निवेदन है कि प्रत्येक आर्य समाज से आर्यजन इसमें सम्मिलित होकर इसे भव्य बनाने में सहयोगी बनें।

सम्मेलन में आपके संगठन उन्नति हेतु सुझाव सादर आमन्त्रित हैं, कृपया लिखित में अभी से महू पते पर प्रेषित करें ताकि उन पर सम्मेलन में विचार विमर्श हो सके।

इस सम्मेलन की सार्थकता व सफलता समस्त आर्यजनों के द्वारा तन मन धन से प्राप्त होने वाले सहयोग से ही संभव है।

विनीत :

प्रधान, मन्त्री, संयोजक, कोषाध्यक्ष

एवं समस्त कार्यकारिणी व पदाधिकारीगण

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका का सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। समयावधि पूर्ण होने पर अपनी सहयोग राशि कृपया भेजें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है. ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य,पवित्र और सृष्टिकर्ता है। इसी की उपासना करनी योग्य है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना■सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।
आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - प्रकाश आर्य, महू